Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

June-2021, Volume : 08, Issue : 01, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

९७वीं स्वर्गतिथि के प्रसंग पर योगनिष्ठ

प. पू. आ. श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म. सा. को कोटी-कोटी वंदना

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन लेखन सामग्री सचित्र परिचय (चित्र श्रेणी - ४)

शलाका- गोटके की सिलाई, ताड़पत्र आदि में छेद करने हेतु उपयोगी साधन ।

प्रकार (परिकर) चिमटा कलम सहः- गोलाकार रेखाचित्र आदि बनाने के लिये उपयोगी साधन ।

काष्ठपट्टिका- चिमटा कलम या बरू कलम से पार्श्वरेखा आदि रेखा बनाने के बाद काष्टपट्टिका हटाते समय स्याही कागज पर न फैले वैसी विशिष्ट संचरनावाली ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-८, अंक-१, कुल अंक-८५, जून-२०२१

Year-8, Issue-1, Total Issue-85, June-2021

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा, राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जून, २०२१, वि. सं. २०७७, ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	९
५.	ऋषिदत्ता चरित्र	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	११
६.	योगकल्पद्रुम	मुनि देवर्षिवल्लभविजय म.सा.	२३
७.	सिरोही राज्य अने जैन स्थापत्यो	मुनि श्री ज्ञानविजयजी	२८
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३१
९.	समाचार सार		३३

अंबाफल गुरुवयणडां, प्रथम कसायल जोई।

जिम जिम फल पाकइ पडइ, तिम तिम मीठा होइ ॥38॥

प्रत क्र. ११९०५२

(मेघराज रचित ऋषिदत्ता रास (अप्रगट) में से)

अनुवाद - आम्रफल व गुरुवचन प्रथम कसैले लगते हैं, लेकिन जैसे-जैसे वह पकते हैं, वैसे-वैसे मीठे होते जाते हैं।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में

डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी

अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

प्रस्तुत अंक में विविध स्तंभों के तहत कुल ६ लेखों का प्रकाशन किया जा रहा है। उनमें से दो अप्रगट कृतियाँ प्रकाशित की जा रही है।

प्रस्तुत महिने में दो विशेष प्रसंग (वह भी बिलकुल पास-पास की तीथिओं में) उपस्थित हो रहे हैं। ज्येष्ठ वदि ३ (वि. सं. १९८१) योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि तथा ज्येष्ठ वदि ४ माननीय शेठ श्री लालभाई दलपतभाई की पुण्यतिथि। दोनों के जन्म, स्वर्ग एवं जीवनकाल में ज्यादा अंतर नहीं था। यथा शेठश्री का समय ई.स. १८६३ से १९१२ व आयु ४९ वर्ष। योगनिष्ठश्री का समय ई.स. १८७४ से १९२५ व आयु- ५१ वर्ष था। योगनिष्ठश्री उस जमाने में अठारह आलम के महान अवधूत, जिनशासनगगन के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। शेठश्री अध्यात्मरसिक, धर्मप्रेमी, जिनशासन के समर्थ अग्रणी थे व योगनिष्ठश्री के प्रति अपार भक्ति धराते थे। दोनों ने ही अपने अल्प जीवनकाल में जिनशासन के दीर्घकालीन प्रभावक कार्य किये। पहले स्वर्गस्थ हुए सेठश्री के विषय में उस समय योगनिष्ठश्री नें स्वयं उनके गुणों का स्मरण, श्रद्धांजलि व प्रेरक सदुपदेश अपनी किताब 'धार्मिक गद्य संग्रह तथा पत्र सदुपदेश' में छापा है। इसे हमनें गुरुवाणी नामक प्रथम स्तंभ के तहत (नूतन शीर्षक के साथ) प्रकाशित किया है, जो वाचकवर्ग के लिए रुचिकर व प्रेरक होगा।

श्रुतसागर संपादक मंडल की ओर से प. पू. योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के ९७वें स्वर्गदिन पर कोटी-कोटी वंदना के साथ सादर श्रद्धासुमन समर्पित है। शेठ श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख माननीय शेठ श्री लालभाई दलपतभाई की ११०वीं पुण्यतिथि प्रसंग पर उनके पुण्यकार्यों के संस्मरण सह उन्हें भी सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।

द्वितीय लेख इंग्लिश में राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक '**Awakening**' से क्रमशः संकलित किया गया है, इसमें सकारात्मक-नकारात्मक दृष्टिकोण की बात व रोहिनेय चोर के दृष्टांत से जिनवाणी की महत्ता दर्शाई गई है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के अन्तर्गत सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित तथा सुमतिमाणिक्य रचित मारुगुर्जरभाषानिबद्ध पद्यबद्ध **“ऋषिदत्ता रास”** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति में महासती ऋषिदत्ता द्वारा पूर्वभव में एक साध्वीजी भगवंत पर रखे गये जूठे आरोप के दारुण परिणाम व शीलमहिमा की बात प्रस्तुत की गई है। द्वितीय अप्रगट कृति के रूप में मुनि श्री देवर्षिवल्लभ म. सा. के द्वारा सम्पादित संस्कृत पद्य कृति **“योगकल्पद्रुम”** को सानुवाद क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। यह कृति आत्मसमृद्धि की पहचान व उसे आवृत कर देने वाले परपदार्थों की भयानकता को दर्शाती है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत मुनि श्री ज्ञानविजयजी के द्वारा लिखित **“शिरोही राज्य अने जैन स्थापत्य”** नामक लेख प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत शिरोही तथा शिरोही स्टेट के विविध ग्रामों में स्थापित मंदिरों, जिनप्रतिमाओं आदि स्थापत्यों का संवत सह विवरण प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत इस बार पंडित श्री अमृतभाई पटेल द्वारा संपादित-संकलित **‘छंदोनुसंधान’** का परिचय दिया गया है। इसमें विविध छंदों के अभ्यास में अन्य छंदग्रंथों की अपेक्षा प्रस्तुत किताब की क्या विशेषता व महत्ता है, उसका वर्णन किया है। हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे। जिससे आगामी अंक को और भी परिष्कृत किया जा सके।

❊ ♦ ❊

(अनुसंधान पेज ८ पर से)

तेओए जैनधर्मना शुभ कार्यमां आगेवानी भर्यो भाग लीधो छे। सतत उद्योग, व्यवहार कुशळता, व्यसन रहित दशा, धैर्य, गंभीरता, विवेक अने गुरुजन सेवा वगेरे गुणो तेमनामां घणा हता। ते वारंवार स्मरणमां आवे छे। तेमना आत्माने शान्ति मळो! संसारमां कोइ अमर रह्यो नथी। अने कोइ अमर रहेनार नथी। मृत्युना पंझामां फसातां पहेलां धर्मनी आराधना करी लेवी जोइए। आ क्षणिक संसारमांथी परमशान्तिनो मार्ग ग्रही लेवो जोइए।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –२७४-२७५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू. पू. आराधक संघ, बीजापुर
- श्री कोलकाता गुजराती समाज, कोलकाता
- श्री आदिनाथ सोसायटी जैन टेम्पल ट्रस्ट, पूना
- श्रीमती ईच्छागौरी चेरीटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
- बिरला एकेडेमी ओफ आर्ट एन्ड कल्चर, कोलकाता
- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन जिनालय जैन श्वे. तीर्थ पेढी, भायंदर (वे), थाणा
- वोरा एन्टरप्राईझ, भांडुप (वे) मुंबई
- श्री जैन आदेश्वरजी महाराज माहीम तड मारवाडी संघ एन्ड चेरीटीझ, माहीम, मुंबई
- श्रीमती हिनाबेन श्रेणिकभाई नविनचंद्र शाह, खानपुर,अमदावाद
- श्री अशोक ग्राम जैन टेम्पल ट्रस्ट, कांदिवली, (ई)मुंबई
- श्री गौहरबाग जैन श्वे. मू. पू. संघ, नेमनगर, बीलीमोरा

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

शेठ श्री लालभाइ दलपतभाइना देहावसान प्रसंगे योगनिष्ठश्रीनी श्रद्धांजलि अने संदेश (११०मी पुण्यतिथि प्रसंगे प्रस्तुत)

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

संवत् १९६८ ना जेठ वदि ५ बुधवार ता. ५ मी जुन १९१२ अमदावाद.

जेम बने तेम अति त्वराथी आत्म कल्याणने साधवा तत्पर थवानी जरूर छे। मनुष्यनी जींदगी पाणीना परपोटा जेवी क्षणिक छे। एक क्षण मात्र पण प्रमाद करवा योग्य नथी। आजनी रात्रीए अमदावाद संघना आगेवान तथा सागरगच्छना आगेवान शेठ लालभाइ दलपतभाइना आत्माए देहनो त्याग कर्यो। रात्रे एक वागे नखमां पण रोग न होय एवी दशाए वातचित करतां सुइ गया हता अने प्रातःकाळमां तेओ एकदम छातीना रोगथी मरण पाम्या तेमनी मा गंगाबेन उपर तेमनो अत्यंत प्रेम हतो। तेमनी आज्ञानो ते कदि लोप करता नहोता। शेठ लालभाइ हमारी पासे घणीवार दर्शनार्थे व्याख्यार्थे आव्या हता। तेथी तेमना उत्तम सद्गुणो जोवानो अमने वखत मळ्यो हतो। जैन तीर्थोनी रक्षा अने कन्याओने केळववामां तेओ आगेवानीभर्यो लाभ लेता हता। तेमना हाथे अनेक शुभ कार्य थया छे। जैन कोममां प्रथम नंबरना ए आगेवान पुरुष हता। माताना उपर प्रेम अने मातानी आज्ञा पाळवामां तेनां जेवो श्रीमंत पुरुष मारी आंखे अद्यापि पर्यंत देखायो नथी। तेओए संवत् १९६८ ना जेठ वदि ४ ना रात्रीए पांच वागे देह छोड्यो। सरकार तरफथी तेमने सरदारनी पदवी मळी हती। मुंबइ इलाकामां आगेवान, आणंदजी कल्याणजीनी पेढीमां आगेवान, परस्त्री सहोदर, जैन कोमनो स्तंभ अने गुर्जर देशनो दीपक गुल थयो देखीने कोना मनमां वैराग्य न प्रकटे। जुनो जमानो अने नवीन जमानो देखनार अने समयने ओळखनार ते उत्तम शेठ हता। तेमना मरणथी आखा अमदावाद शहेरमां हाहाकार वर्ताइ रह्यो छे। शेठ लालभाइमां पोतानां कार्यो पोताने हाथे करवानो उत्तम गुण हतो। जैनशासन उपर अत्यंत प्रेम हतो। जैनधर्मनी हाडोहाड श्रद्धा धारणकार ते शेठ हता। दररोज एक सामायिक करवानो अने प्रभु पूजा करवानी दृढ प्रतिज्ञा धारक हता। दररोज तेओ सामायिकमां आनन्दघनजी, चिदानंदजी अने यशोविजयनां पदो गाता हता। ते पदो केटलीक वखत में सांभळ्यां पण हतां।

(अनुसंधान पेज ६ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

There are two ways of looking at life. One is the way of delusion or self-deception; and the other is the way of right perception. False perception reveals unfavorable and adverse things everywhere and true perception reveals favorable things everywhere.

A boy began weeping on seeing a rose-plant in a garden. When he was asked why he was weeping, he said, "There are thorns beside these beautiful flowers". Another boy began laughing with joy when he saw the same plant. When he was asked why he was laughing, he said, "Even among these sharp and pointed thorns, beautiful flowers have blossomed".

The result of the absence of right perception is that we forget what we should remember and remember what we should forget. People forget the words of the Lord, which they hear at the discourse, soon after they return home. But they remember throughout their life the harsh and cruel words uttered by somebody and keep worrying over such words. Even a few words of the Lord can help us if we hear them and remember them. The father of Rohineya, the thief, advised him before his death that he should never hear the words of the Lord. One day, Rohineya was going on his way. He passed by a place where the Lord's discourse was going on. He put his fingers into his ears, so that he might not hear the discourse and began running. But while he was running he stepped on a thorn and instinctively he took out his fingers from his ears; hurriedly removed the thorn from his foot and again began running.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

The next day, he was arrested. The king adopted a trick to make him confess his crime. In the night, he was made to stay in the midst of beautiful damsels. One beautiful damsel said to him, "On account of your merit, after your death you have come to heaven. We are apsarasas (celestial damsels) and we are here to attend on you. If you have committed any evil action in your life on the earth tell us and we will secure a pardon for you from Lord Indra. Otherwise, you will have to go to hell".

On the previous day, when Rohineya stopped to remove the thorn from his foot and when he took off his fingers from his ears, he had heard a few words of the Lord. The Lord was describing the features and qualities of divine beings. He was saying that their shadows would not fall upon the ground; the flower-garlands around their necks would not fade; they would not stand on the ground and that their eyelids would be motionless. Rohineya rememberd these words of the Lord relating to the features and qualities of divine beings. He could not find any of those features in the beautiful ladies around him. He found out that the drama was being enacted only to make him confess his crime. At once, he became cautious and said, "I have done only good deeds in my life and I have attained this heaven. I have not committed any sins".

The result was he was released. On returning home, he began to think of what had happened. He realized that if a few words of the Lord could help him to save his life, he would have got a greater benefit if he had heard the entire discourse. In consequence, a great transformation took place in him and he was successful in attaining spiritual elevation.

(Continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनि सुमतिमाणिक्य कृत

ऋषिदत्ता चरित्र

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

कोईना पर पण मूंकेला नाना अमथा आळने लीधे भविष्यमां तेना केवा-केवा दारुण विपाको भोगववा पडे छे तेनुं तादृश स्वरूप आलेखतुं कथानक एटले ज ऋषिदत्ता महासती चरित्र। पूर्वना भवमां साध्वीजी भगवंतना चारित्र पर आक्षेप मूंकनार गंगसेना(ऋषिदत्ता)ने भवांतरमां भोगववा पडेला दुःखोनो अहीं अद्भुत चितार आलेखायो छे। ते कथानो संक्षिप्त सार आ प्रमाणे छे।

कथासार

रथमर्दनपुर नगरीना युवराज कनककुमारना लग्न कावेरीनी राजकुमारी रुक्मिणी साथे नक्की थया। एक शुभ दिवसे लग्न माटे युवराज पोताना परिवार साथे कावेरी जई रह्या हता। मार्गमां कोई जंगलमांथी पसार थता तेमणे एक अति सौंदर्यवान ऋषिकन्याने जोई। अद्भुतरूपवाळी तेणी पर मोहित थयेला कुमार ते ऋषिकन्याने शोधता जंगलना जिनप्रासादमां जई चड्यो। अहीं प्रासादमां कोई अतिथिने आवेला जोई नजीकमां वसता तापस श्रीषेण पण त्यां पधार्या। कुमार पासेथी ऋषिकन्यानी वात सांभळी, तेने तेणी पर आसक्त जाणी तथा तेना गुणोथी आकर्षित थई तेमणे पोतानी ते कन्या ऋषिदत्ता आगंतुक राजकुमार साथे परणावी।

एक दिवस युवराज कनककुमारे ज्यारे ऋषि श्रीषेणने तेमना गृहस्थाश्रमनी तथा जंगलमां प्रतिष्ठित करायेल जिनालयना निर्माण संबंधि पृच्छा करी त्यारे ते वातनो प्रत्युत्तर आपता ऋषि श्रीषेणे कनककुमारने पोताना पूर्वाश्रमनी सर्व हकीकत कही। जेमां तेमणे तेने अनुक्रमे पोताना राज्यनी, पत्नि प्रियदर्शनानी, एक दिवस जंगलमां दूर भूला पडी जता प्रभु ऋषभदेवना शिष्य कच्छ महाकच्छ ऋषिना तापसमुनिओना तेमने दर्शन थयानी तथा तेमना गुणोथी आकर्षाई पोते जंगलमां वास करी अहीं आ जिनमंदिरनुं निर्माण कर्यानी विगत कही।

वळी तेमणे ते वातने आगळ वधारता ते ऋषिमुनिवडे पोताने विषहर मंत्र अपायानी, ते मंत्रना प्रभावथी मंगलावतीपुरनी राजकुमारी प्रीतिमतिने निर्विष करी तेनी साथे पोताना लग्न करायानी, काळांतरे पुत्र अग्निसेनने राज्य सोंपी राणी प्रीतिमति साथे पोते तापसव्रत स्वीकार्यानी, प्रसवकाळ पूर्ण थता गुप्तगर्भा राणीवडे एक सुंदर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्रीने जन्म अपायानी तथा पुत्रीना जन्म बाद मातानुं मृत्यु थता पोताना वडे ते बाळानो उछेर कराया सुधीनी सर्व विगतो पण तेने जणावाई।

आम थोडो समय पसार थये पोतानो मृत्यु समय जाणी ऋषि श्रीषेणे एक दिवस अग्निसमाधि लई देवगति साधी तथा राजकुमार कनककुमार पण लग्ननुं प्रयोजन पूर्ण थयेलुं जाणी पत्नि ऋषिदत्ताने लई त्यांथी ज रथमर्दनपुर पाछो फर्यो।

आ बाजु रथमर्दनपुरथी निकळेला राजकुमार ज्यारे कावेरी न पहोंच्या त्यारे तेना कारणनी तपास करता, मार्गमां कुमारना ऋषिदत्ता साथे लग्न थयानी तथा तेओना त्यांथी ज रथमर्दनपुर पाछा फरी गयानी वात राजकुमारी रुक्मिणीनी जाणमां आवी। ते वातथी दुःखी थयेली तेणीए पोताना लग्न माटे ऋषिदत्ताने अंतरायभूत गणी तेनो कांटो काढी नाखवा सुलसा नामनी योगिनीने रथमर्दनपुर मोकली।

अहीं आवी योगिनीए पोतानी मायाजाळथी एक बाजु राजाने पोतानी उपर आदरबुद्धिवाळा कर्या, तो बीजी बाजु ऋषिदत्ताने नरभक्षिणी साबित करवा कोई न जाणे ते रीते पोते मानव हत्या करी, ते लोही मांसथी ऋषिदत्ताना होठ तथा शयनखंडने खरडवा लागी। आम ज्यारे नगरमां घणा माणसो मरवा लाग्या त्यारे योगिणीए पोताना योगबळे ते मानवहत्याओनुं आळ ऋषिदत्ता उपर मूंक्युं। योगिनीनी मायाजाळमां आबाद सपडायेल राजा हेमरथे पण ज्यारे पोतानी पुत्रवधुने डाकण जाणी त्यारे तेमणे माराओने तेणीने दूर लइ जई मारी नखावानो आदेश आप्यो। माराओ तेणीने मारवा ज्यां दूर स्मशानमां लई गया त्यां ज तेणी मूर्छित थई भूमि पर पडी। पडेली एवी तेणीने निश्चेष्ठ जाणी, तेमज त्यजी दई माराओ नगरमां पाछा फर्या।

आ बाजु योगिनी सुलसाए पोतानुं कार्य सिद्ध थयेलुं जाणी रथमर्दनपुरथी कावेरी जई उपरोक्त सर्व बीना राजकुमारी रुक्मिणी समक्ष रजू करी। मार्गमांथी कांटो निकळी जता रुक्मिणीए पण पिता सुंदरपाणिने कही लग्ननुं निमंत्रण पाठवतो दूत फरी रथमर्दनपुरमां मोकल्यो। राजा हेमरथे अवसर जोई, निमंत्रणने वधावी पुत्र कनककुमारने लग्न माटे फरी कावेरी मोकल्यो।

बीजी बाजु निश्चेष्ठ थयेली ऋषिदत्ता वायुसंचारथी स्वस्थ थई शीलनी रक्षा खातर पुरुषवेष धारण करी जंगलमां रहेवा लागी। एवामां पिता हेमरथवडे लग्न माटे तैयार करायेलो कनककुमार कावेरी जता मार्गमां ते ज जंगलमां आव्यो। अहीं तेणे ऋषिदत्ता जेवा युवान तपस्विने जोइ, तेने ऋषिदत्तानो भाई जाणी अतिआग्रह करी पोतानी साथे कावेरी लाव्यो। कावेरीमां कनककुमारना राजकुमारी रुक्मिणी साथे घणा धामधुमथी लग्न थया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक दिवस वात-वातमां स्वबडाई करती राजकुमारी रुक्मिणीए लग्नमाटे ऋषिदत्ता साथे आचरेला कपटनी वात राजकुमार कनककुमारने कही। ते वात सांभळी संतप्त हृदयवाळा राजकुमारे रुक्मिणीनो त्याग करी आत्मघात माटे चिता सळगाववानो आदेश ज्यारे सेवकोने आप्यो त्यारे तापसकुमारे कनककुमारने ऋषिदत्ता पाछी लावी आपवानुं वचन आप्युं। तापसकुमारनी वात सांभळी आश्वस्त थयेला कुमारे ऋषिकुमारने तेम करवानुं कह्युं राजकुमारनी आज्ञा थता ऋषिकुमारे पोतानुं ऋषिदत्ता तरीकेनुं मूळरूप कुमार पासे प्रगट करी, ससरा हेमरथ राजावडे पोताने त्यजाया बादनी सर्व हकिकत तेने निवेदित करी। वळी तेणीए क्रोधथी त्यजायेली रुक्मिणीने स्वीकारवा राजकुमार कनककुमारने फरी तैयार कर्या। पछी केटलोक काळ सुखपूर्वक व्यतित थये तेओ रथमर्दनपुरमां पाछा फर्या।

एक दिवस संध्या समये वादळना बदलता रंगोने जोईने संसारनी क्षणभंगुरताने विचारता कनककुमारने वैराग्य उत्पन्न थयो। एवामां रथमर्दनपुरमां गुरुभगवंतनी पधरामणी थता कनककुमार परिवार सहित तेमने वंदन करवा गया। गुरुभगवंतने वंदन करी तेमणे तेमनी पासे मुक्तिमार्गने साधवा ज्यारे धर्म(संयम)नी मांगणी करी त्यारे ऋषिदत्ताए गुरुभगवंतने पोताना पर आवेला खोटा आळ अंगे पृच्छा करी।

गुरुभगवंते ज्ञानना उपयोगवडे तेणीना पूर्वभवनी वात जणावता तेना पूर्वभवमां गंगदत्त शेठने त्यां पुत्रीरूपे उत्पन्न थवाथी मांडी महासती पासेना तेना ज्ञानाध्ययननी, लोकमुखे कोई साध्वीजी भगवंतना तपनी अनुमोदना सांभळी गंगाने थयेल ईर्ष्यानी, ईर्ष्याथी ज तेणी वडे ते तपस्वीनी साध्वीजी भगवंत पर मांसभक्षणनुं खोटुं आळ मूकायानी तथा ते पापनी आलोचना कर्या वगर मृत्यु पामी ऋषिदत्ताना भवमां ते आळना आवा दुर्विपाको भोगव्या संबंधि सघळी विगत कही।

आम गुरुभगवंतना मुखथी पोतानुं जीवनवृत्तांत जाणी ईहापोह करतां ऋषिदत्ताने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं। जातिस्मरण ज्ञानद्वारा पोतानो पूर्वभव जोई वैराग्यवासित थयेली तेणीए गुरुभगवंत पासे संयम स्वीकारी चारित्रधर्मना शुद्ध पालन द्वारा भद्दिलपुरमां केवळज्ञान पामी मोक्षे गया।

कृतिकार तथा प्रत परिचय

प्रस्तुत कृति उपरोक्त कथाने आवरी लेती लघु रचना छे। जेमां कविए पहेली ढाळमां कृतिना मंगलाचरणथी राजकुमार कनककुमारवडे तापसनी पूर्वाश्रमनी पृच्छा कराया सुधीनी, बीजी ढाळमां कनककुमारना मार्गमांथी पाछा फरी जतां रुक्मिणीना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उचाट सुधीनी, त्रीजी ढाळमां राजा हेमरथवडे त्यजाती ऋषिदत्तावडे मूर्छा पमाया सुधीनी, चोथी ढाळमां ऋषिदत्ता तथा रुक्मिणीने लई कनककुमारवडे रथमर्दनपुर पाछा फरायानी तथा त्यांनुं राज्य संभाळाया सुधीनी तेमज पांचमी ढाळमां ऋषिदत्तावडे संयम लई केवळज्ञान पमाया सुधीनी घटना अनुक्रमे वर्णवी छेल्ले कविए पोताना नामोल्लेख द्वारा काव्यनुं समापन कर्युं छे।

कृतिकार सुमतिमाणिक्य कई परंपराना छे ? के तेमना गुरु कोण छे ? ते अंगे तपास करवानुं कोई साधन कृतिमां मळतुं नथी तेथी ते अंगे कशु तपासी शकाय तेम नथी। वळी जैन गुर्जर कविओ के साहित्यकोश जेवा ग्रंथोमां पण आवा नामथी कोई कवि थयानो उल्लेख मळतो न होवाथी तेमना विशेनी अटकळ करी शकाय तेम नथी।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा खाते हस्तप्रत क्र. ६८९६७ मां वि०सं० १५८९ मां पं० सुमतिमाणिक्य गणिना शिष्य पं० माणिक्यमंगल गणि अने तेमना शिष्य विजयमाणिक्य गणि द्वारा श्राविका पूराई पठनार्थ गौतमपृच्छा चउपईनी एक हस्तप्रतनुं लेखन थयेल छे। ऋषिदत्तानी हस्तप्रतमां पण पठनार्थ सं० पूराई बाईनुं नाम मळे छे। बन्ने प्रतना लेखनमां ४४ वर्षनुं अंतर छे। आटला ऊपरथी कर्तानी शिष्य परंपरा तथा समय वि० १६ उत्तरार्ध थी १७मी पूर्वार्धनो होवानुं अनुमान थाय छे। साथे ऋषिदत्ता चौपाईनी ह.प्र. रचना समीपवर्ती काळनी होवा पण संभव छे। जो के ते अंगे विशेष तपासनी जरूर छे।

खास संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी आदर्श हस्तप्रत नकल आपवा बदल भवन्स लायब्रेरी-मुंबईना व्यवस्थापकश्रीनो तथा जोनीभाई शाहनो तथा पाठांतर माटे हस्तप्रत आपवा बदल श्रीअमरविजय जैन भंडार-डभोईना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार।

ऋषिदत्ता रास

॥ॐ॥ **गोयम** गणहर वीनवुं, साहेलडी रे प्रणमीअ श्री**वर्द्धमांन**।
पूछइ **ऋषिदत्ता**-चरी[1], साहेलडी रे निसुणइ सहू सावधान ॥१॥
सावधान परषद बार, निसुणइ हईइ आणी हर्ष।
सरस साकर सेलडी, समजाइं सुणतां वर्ष[2] ॥२॥
खीरसागर ऊलटिउ, करि ऊलटिउ रसरेल[3]।
इकचित्तिं सहूइ सांभलइं, तिहां नवी मोहणवेलि ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रथमर्दनपुर राजीउ, साहेलडी रे ***हि(हे)मरथ*** नामिं नरिंद ।
सुयशा रांणी उरि धरिउ, साहेलडी रे **कणयरथ** मोहन-कंद ॥४॥

मोहनवेल-कंद सुचंद-निम्मल कमल-कोमल-काय,
यौवनवेसि अलंकरिउ ते चित्ति चमकु लाइ ।
नव-नवी परि रंगि खेलइं वाडी विवध वसंत,
माननी मन मोहतु रति-प्रीति[४] केरउ कंत ॥५॥

नयरी **कावेरी** भोगवइ, साहेलडी रे राजा **सुंदरपाणि** ।
[1]**रूकमणि** बेटी तेहनी, साहेलडी रे अमरकन्या सम जांणि ॥६॥

अमरकन्या जांणि युवती, सती सील-विसुद्ध ।
तस परणेवा चालीउ, शुभ लगन वेला लिद्ध ॥७॥

घण गुहिर[५] सादइ वेगि [2]वादइं[६], वाजइ ढोल नीसाणा(ण) ।
गिर समाणा गय गुडिया[७] तिहां, पाखरियां[८] केकाण[९] ॥८॥

वाडी वन रुलीयामणां, साहेलडी रे आविउं अति अभिरांम ।
जल जोवा जण चालीया, साहेलडी रे दीठउ सरोवर तांम ॥९॥

तांम सरोवर पालि डालइ, पंखीआ नही पार ।
इक हीचोलइ[१०] नारि हीचइं, प्रीतिनइं[११] अवतारि ॥१०॥

कुमरप्रतइं नर वीनविउं, नइं जाइ जोवा जांम ।
चकित हरिणी-लोयणी[१२] ते, नारी नाठी[१३] तांम ॥११॥

कुमर जोअंतु आवीउ, साहेलडी रे मनि ऊपनुं विखवाद ।
प्रवचन[१४] परइं पग परठीउ, साहेलडी रे दीठउ जिनप्रासाद ॥१२॥

प्रासाद नरखिउ हीइ हरखिउ वंदीआ जिनराय,
कुमर सरिसु एक तापस आवीउ तिणि ठाइ ।
ते वृद्ध बोलइ अमृत तोलइ कवण कुल-आचार,
हेमरथ राजातणउ नंदन कणयरथकुमार ॥१३॥

गुण देखी ते गहिगहिउ, साहेलडी रे परणावइ वर बाल ।
ऋषिदत्ता महासती, साहेलडी रे कंठि ठवइ वरबा(मा)ल ॥१४॥

---

1. रुखमिणि, 2. वाजिइ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरमाल थापी पाणि[१५] आपी, प्रीतिसिउं प्रिय{उ}स्यूं मिली।
मनरंगि खेलइ कंथ-बेलइं[१६], दूधसिउं साकर भिली ॥१५॥

श्रीषेण तापस पूछीउ [3]तव, [4]कुमर कुल-आचार।
कुण देसि वास तुम्हारडउ, [5]कुण जि(जै)न-वै(वि)हार ॥१६॥

॥ बाहुबलि राणउ इम [6]चींतवइ-ए ढाल ॥

तापस कहइ सुणउ कुमरजी, **मित्रणावती** मझ वास रे।
श्रीषेण नामि हुं राजीउ, रांणी **प्री(प्रि)यदरशना** जास रे ॥१७॥

राजन रंगि रूडउ धरइ, गोरी गुण अधिक सनेह रे।
चतुरपणइं चित्त चोरीआं, जिम रे बापीअडा[१७] मेह रे ॥१८॥ राजन...(आंकणी)

इक दिन गउ[१८] वनि खेलवा, चडिउ चडिउ विपरीति(त) वाहि[१९] रे।
सबल-शाखा वड ग्रही रह(हि)उ, वीसमिउ[२०] तरूअर-छाहि रे ॥१९॥ राजन...

सान[२१] लही सरोवरि गउ, धोआं मुख पाग सरी(सीर?) रे।
गज जिम जल अवगाहतां[२२], पीइ पीइ निरमल नीर रे ॥२०॥ राजन...

कछ महाकछ मुनितणा, दीठउलो(ला) तापस ताम रे।
भूपतइं भगतिसिउं वांदीआ, आवी सेना तिणि ठामि रे ॥२१॥ राजन...

तापसगुणिं राउ रंजीउ, रहिउ रहिउ वनि एक मास रे।
जिनह-भवन तव थापीउ, **ऋषभ**जिन थापिया उल्हासि रे ॥२२॥राजन...

मुनि मोकलावी चालीउ, कुलपतिइं दीधलउ[२३] मंत्र रे।
विसहर-विस एणइ ऊतरइ, अवर न एह समु तंत्र रे ॥२३॥राजन....

राजसभाइ बइठउ राजीउ, इक दिनि वीनवइ दूत रे।
श्री**मंगलावलीपुर**-धणी, **प्रिअदरसन** अनुभूत[२४] रे ॥२४॥ राजन...

प्रीतिमती सुता तेह तणी, फणिपति डसीअ छइ सोइ रे।
सा(सां)ढि ह(हं)कारी चालीउ, मंत्रि(त्र-)बलि निरविष होइ रे ॥२५॥ राजन...

परणीअ प्रीतिमती सती, युवती अधिक सनेह रे।
यौवनवेस अलंकरी, **अजितसेन** सुत ठविउ तेह रे ॥२६॥ राजन...

---

3. थिति, 4. कविण, 5. कविण, 6. वीनवइं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तापसव्रत भलुं आदरी, जीतु जीतु करमनुं भार रे।
मासनइं पंच जव वुलीआ[२५], दीठउ तव गरभविकार रे ॥२७॥ राजन...

तापसे ततखिण निरखीउं, परखीउं करम कठोर रे।
कंत कहइं **सुणउ** कामिनी, ए क(कि)सिउं[२६] करिउं अघोर[२७] रे ॥२८॥ राजन....

गुपत-गरभ नवि जाणीउ, जव लीउ तापसवेस रे।
जिम जिम गरभ कला चडइ, तिम तिम अधिक सुभ लेस रे ॥२९॥ राजन..

जनमीअ कुंअरि कमला जिसी, दीधउं **ऋषिदत्ता** ए नाम रे।
माइ अमरापुर पांमीउ, जोउ जोउ करम-विराम रे ॥३०॥ राजन...

ताति पालीनइं पोढी[२८] करी, अनुसरी यौवनवेस रे।
परणउनइं कुअर ए कामिनी, कामिनी करुं अंदेस[२९] रे ॥३१॥ राजन...

तरुणीअ हरणीअ-लोयणी, परणीय रहिउ इक मास रे।
अगनि दही ते तु तापसइ, लीधु लीधु शिवपुरवास रे ॥३२॥ राजन...

तात-विरहानलि[३०] आकुली, गलगल[३१] [7]रोतीय बाल रे।
कंथ मनावइ ते कामिनी, ए सहू आल-पंपाल[३२] रे ॥३३॥ राजन...

धन यौवनसुख कारिमां, कवण पिता परिवार रे।
पदमनि पामी पाछउ वलिउं, [8]गयुं नीय नयर मझारि रे ॥३४॥ राजन...

रखि(रूख)मणि राउ पाछउ वलिउ, सांभलिउ जनमुखि तांम रे।
ऊचाटइ[३३] अति घणुं घाघली[३४], मुखि लवइ[३५] प्रीय प्रीय नांम रे ॥३५॥ राजन...

॥ हवइ-सींधूउ ॥

रखि(रूख)मणि रांणी रे दिइ उलंभडा[३६], पाछउ कां वलिउ [9]नाह रे।
तापसीरूपइ [10]तां भोलविउ, गिरूआं ए सिउ [11]भाय ॥३६॥

स(सु)गुण-सनेही प्रियगुण सांभरइ, कूडु करम-संयोग।
वाहला वछोहियां[३७] दिन किम नीगमू[३८], जिम माछिली जल-योग ॥३७॥ सुगुण...

सुलसा नांमि योगिणि{इ} एक मली, मांडिउ कूड प्रपंच।
रख(थ)मर्दनपुरि कूडी परि करी, मारइ नर ते [12]असंख(खंच) ॥३८॥ सुगुण...

---

7. रोइ ते, 8. पोहोतो, 9. तू नाह, 10. तूं, 11. भाउ, 12. अखंच,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निद्रा परवसि लोही मुख भरिउं, ठविउ उसीसइ[३९] मांस।
प्रह ऊगमतइं कुमरइ निरखीउं, उडिउ हईडानुं हांस ॥३९॥ सुगुण...

जल लेईनइ मुख पखालीउं, नाविउं मनि अपराध।
सती-शिरोमणि पापणि वसि पडी, वनडी[४०] परि परि साधु ॥४०॥ सुगुण...

इम करतां दिन केता गया, बोलिउ हेमरथ राय।
तापस तपस(सि)णि जंगम योगिणी, काढिउ करी रे उपाय ॥४१॥ सुगुण...

पभणइ सुलसा योगिणि पापिणी, मांडी माया जाल।
वहूअ तुम्हारी रे नरभक्षि(क्ष)ण करइ, योगिडा किसिउ रे ऊकाल(?)[४१] ॥४२॥ सुगुण...

राजा योगिणि माया मनि धरी, देइ र(ऋ)षिदत्तानइ आल।
दंडपासिक[४२] ते सबला सामहिया[४३], वाजइ विरूआ काहला[४४] ॥४३॥ सुगुण...

आवी [13]मूर्छा [14]धरणीतलि ढली,[15]मूंकी अचेतन बाल।
वायु विशेषइ वली चेतन लही, पेटि पडी तव झाल ॥४४॥ सुगुण...

॥ इक दिन सारथि(थ)पति भणइ-ए ढाल ॥

आं(अ)बला चाली एकली, लूझलिं[४५] दाझइ देह।
[16]आ(आं)सू-जलि नयणां भरियां, सांभरी अधिक सनेहो रे ॥४५॥

प्रीयगुण सांभरइं, पाप(पि)णि पीडिउ छइ छेहो रे।
[17]प्रिय दाझइ दावानल देहो रे ॥४६॥ प्रीय...

पुहुती तेणइ वनि एकली, कीधुं तापस वेस।
प्रतिबोधी मन आपणउं, पूजइ [18]आदिजिणेसो रे ॥४७॥ प्रीय...

कुमर करइ अति उरतु[४६], खाइ अन्न न पान।
ऋषिदत्ता मनि सांभरइ, हईडइ सान न वानो[४७] रे ॥४८॥ प्रीय...

माय बापइ पुत्र बूझविउ, गउ परणेवा काजि।
रखि(रूख)मणि-ताति तेडवीउ, आवीउ तस वनमाजि रे ॥४९॥ प्रीय...

---

13. ते मूर्छा, 14. धरती, 15. थई, 16. आंखि आंसू जलि भरिया, 17. अहीं “प्रिय-दावानलि दाझइ देहो रे” एवुं पद होवुं जोईए, 18. आदिजिणंदो,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हईडइ गाढउ गहिबरिउ[४८], देखी जिनप्रासाद।
प्रमु(म)दा-प्रेम संभारतु, मनि ऊपनु विखवादो रि(रे) ॥५०॥ प्रीय...

तापसकुमर कलानिलुं, आणी आपइ माल।
जिनपूजी मनि चींतवइ, ए{क} ऋषिदत्तानुं भायो[४९] रे ॥५१॥ प्रीय...

साथइ सोइ तापस लीउ, गउ काबेरीमांहि।
परणी रखि(रूख)मणि कुंअरी, रंगि भलो वीवाहो रे ॥५२॥ प्रीय...

एक दिन बइठा रंगभरइ, पूछइ कुमरी वात।
प्रीय तपसिणि ते वीसरी, जीन(जिण)इं कीउ लगन-विघातो रे ॥५३॥प्रीय...

पूरव वीतक[५०] सांभली, मनि झाखुं थउ राय।
मझ वि(वइ)रणि[५१] ए पापिणी, अगनि दहेसु ए काया रे ॥५४॥ प्रीय...

अगनि दहेवा चालीउ, तापस लीधु साथि।
तुझ मांननि मइ आणिवी, दीधउ जिमणउ हाथु(थ) रे ॥५५॥ प्रीय...

रूप प्रगट करी पदमिनी, पुहुती प्रीयनइं पासि।
मनरंगइ माननि मली, वलीउ नयर उलासि रे ॥५६॥ प्रीय...

बहिन भणी प्रीय प्रीछवी, रखि(रूख)मणि करिउ पसाय।
रथमर्दनपुरि आवीउ, हुउ प्रथवीपति राउ रे ॥५७॥ प्रीय...

॥ निसिभरि सोहग सुंदरी-ए ढाल ॥

इक दिन बइठउ मालीइ रे, लेई र(ऋ)षिदत्ता पासि।
सांझ समु तव आवीउ रे, देखी आभूआ[५२] आकासि रे ॥५८॥

राजन हईडइ धरइ रे वइराग, देखी नवरंग आभला[५३] रे।
आभला थाइं विराग रे ॥५९॥ राजन...[आंकणी]

उपशमरसभरि ऊलटिउ[५४] [रे], जोइ जोइ सहिगुरु वाट।
यशोभद्रसूरि गुरु आवीआ रे, प्रगटिआ पुण्य-आघाट[५५] रे ॥६०॥ राजन...

वांदी गुरु देसण सुणी रे, बइठा धरी वइराग।
माग[५६] मुगतिनउ [19]साधसिउं रे, पाम्या भइलइ[५७] तुह्म(म्ह) पाग रे ॥६१॥ राजन...

---

19. साधिउं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूछइ र(ऋ)षिदत्ता नमी रे, [20]सियां[५८] कर्या करम कठोर{रे}।
चोरतणी परि मइ खमी[५९] [रे], केहां करम अघोर रे ।।६२।। राजन...

गुरु कहइ **गंगापुरि** हऊ रे, **गंगदत्त** सेठि सुजांण।
गंगादे उरि हंसली रे, **गंगसेनी** तु जांणि [रे] ।।६३।। राजन...

चंद्रयशा तिहां महासती रे, तिहां तुं धर{इ}म भणेइ।
तृण परि विषय विचारतां रे, जिनमत-सार सणेइ [रे] ।।६४।। राजन...

एक महासति(ती) तप करइ रे, जीतु[६०] जीतु भणइ ए लोक।
दुस्तपकारि[६१] ए महासती रे, अवर करइ ते फोक[६२] रे ।।६५।। राजन...

ते देखी मछर धरिउ रे, महासति(ती) दीधउ आल।
मांस आहारइ ए पापणी रे, मांडइ मायाजाल रे ।।६६।। राजन...

सहिगुरु कहइं जस्यां लव्या रे, तिस्यां भोगवियां कर्म।
[21]पूरवभव वीतक सुणी रे, हईडइ वसीउ धम(र्म) रे ।।६७।। राजन...

जाती-समरण जाणीउ रे, मागइ संयमभार।
राय रांणा व्रत आचरिया रे, वरि(र)तिउ जय-जयकार [रे] ।।६८।। राजन...

भद्दलि(द्दिल)पुर केवल लही रे, साधिउ सिवपद सार।
सीलइ सवि सुख संपजइ रे, नित नवला सिणगार रे ।।६९।। राजन...

राज-रमणि सुख संपजइ रे, सीलइ सुख संतान।
सुमतिमाणिक्य मनि [22]उ[ज]लउ[६३] रे, सीलइ नवइं निधांन रे ।।७०।। राजन...

।। इति श्रीऋषिदत्ता रास संपूरणं(र्ण) ।। संवत् १६३३ वर्षे जेठ वदि १३ बुधे{न} लखितं देवजी ।। बाई सं० पूराई पठनारथं(र्थं) ।।श्री।।श्री।।श्री।।छ।।

शब्दकोश

१. चरित्र, २. ?, ३. रसनी छोळ, ४. रति, ५. गंभीर, ६. वागे, ७. कवच विगेरेथी सज्ज (हाथी?), ८. बख्तर वगेरेथी सज्ज करेला, ९. घोडा, १०. हींचके, ११. रति, १२. मृग जेवी आंखवाळी, १३. दोडी गई, १४. ?, १५. हाथ, १६. जोडी(?), १७. चातक, १८. गयुं, १९. घोडा पर, २०. विश्राम कर्यो, २१. भान, २२. स्नान करतां, २३. आप्यो, २४.

20. किसिया, 21. पूरव वीतक सांभली रे, 22. ऊजलू.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माणतो(?), २५. पाछा फर्या, २६. कयो, २७. असुंदर (कार्य), २८. मोटी, २९. (कार्य ?), ३०. विरहाग्निमां, ३१. गळगळ=दुखार्द्र (थई), ३२. मिथ्या वस्तुओ, ३३. वियोगथी, ३४. विह्वळ, ३५. बोले छे, ३६. ठपको, ३७. अळगां कर्यां, ३८. पसार करुं, ३९. ओशीका पर, ४०. वनमां रहेनारी स्त्री (?), ४१. ?, ४२. ?, ४३. सामैया=वाजते गाजते गंतव्य स्थाने लई जवुं ते, ४४. ढोल के भेरीना प्रकारनुं वाद्य, ४५. गरम लू थी, ४६. अभिलाषा, ४७. शोभा, ४८. व्याकुळ थयुं, ४९. भ्राता, ५०. वात, ५१. वैरी, ५२. वादळु, ५३. आकाश, ५४. आनंदित थयो, ५५. पुण्यनी सीमा, ५६. मार्ग, ५७. भले, ५८. कयां, ५९. सहन कर्या, ६०. जीत्या, ६१. दुष्कर तप करनार, ६२. व्यर्थ, ६३. उज्ज्वळ.

ऋषिदत्ता संबंधी प्रगट-अप्रगट कृतिओनी सूची*

नाम	कर्ता	र.सं.	गाथा	आदि पद
ऋषिदत्ता चरित्र (सं०)*	(आख्यानमणिकोश वृत्तिमां) आम्रदेवसूरि	११९०	५४०	अत्थिअदिट्ठोव-ह्ववघण...
ऋषिदत्ता चरित्र (सं०) (विवेकमंजरी वृत्तिमां)*	बालचंद्रसूरि	१२४८		
ऋषिदत्ता चरित्र (प्रा०)	गुणपाल	१२६४/१२८८	१५५०	नमिऊण चलणजुयलं...
ऋषिदत्ता चरित्र(?)*	अज्ञात	१५४२		
ऋषिदत्ता चोपाई*	देवकळश	१५६९	३०१	श्रीसरसति सुपसाउलइ...
ऋषिदत्ता महासती चोपाई*	शिवकळश	१५६९	३०३	
ऋषिदत्ता महासती रास*	सहजसुंदर	१५७२		पणमवि सरसति जगि जइवंता...
ऋषिदत्ता चरित्र(सं०)	अज्ञात	ले.१५७९	४ उल्लास	श्रीमन्नम्रनरेशमौलि-मुकुट...
ऋषिदत्ता चरित्र(सं०)	अज्ञात	१५-१६मी सदी	४४६	दुग्गइपहपत्थाणं...
ऋषिदत्ता सती चोपाई*	रंगसार	१६२६	११५	पढम पणमिय पढम...
ऋषिदत्ता चोपाई/सज्झाय	सुमतिमाणिक्य	१६२७	७०	गोयम गणहर विनवुं

* अहीं कृतिनाम पाछळ सं./प्रा. लख्या सिवायनी शेष कृति प्रायः मरुगुर्जर भाषानी छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋषिदत्ता रास*	मेघराज	१६५७	४८०	नाभि नेरसर वर घरइं...
ऋषिदत्ता महासती रास	जयवंतसूरि	१६४३	५६२	प्रथम नाथ दाता प्रथम.../उदय अधिक दिन दिन अधिक...
ऋषिदत्ता रास*	मतिसार	१६४३		
ऋषिदत्ता चोपाई*	ज्ञानचंद्र	१६६३	२६८	पहिली अरिहंत प्रणमिनइ...
ऋषिदत्ता चोपाई*	गुणविनय वा.	१६६३	२६८	पुरुषादेय उदय-करु...
ऋषिदत्ता चोपाई*	धर्मकीर्ति वा०	१६९२	३८८	सुअदेवी समरी करी...
ऋषिदत्ता चोपाई*	महिमा(जिन)समुद्र	१६९८	५००	श्रीश्रीसीमंधर प्रमुख...
ऋषिदत्ता चरित्र*	दयानंद	१६९९		
ऋषिदत्ता चरित्र*	विजयशेखर	१७०७	७७५	विमल विहंगमवाहनी...
ऋषिदत्ता चोपाई*	जिनहर्ष/जसराज	१७४९	४५७	श्रीशांतिसर सोलमउ...
ऋषिदत्ता चोपाई*	वीरमसागर	१७५१		चउवीसे जिन चित्त धरी
ऋषिदत्ता चरित्र*	अज्ञात	१७५२		
ऋषिदत्ता चोपाई*	प्रीतिसागर	१७५२	३८ढा.	पास जिणेसर पय नमी...
ऋषिदत्ता चोपाई	क्षमासमुद्र	१८मी सदी		श्रीश्रीसीमंधरपर-मुख...
ऋषिदत्ता चरित्र (सं० प्रा०)*	अज्ञात	वि.१८२४		
ऋषिदत्ता चउपइ*	सुमति गणि	१८३३		
ऋषिदत्ता चोपाई*	चोथमल ऋ.	१८६४	५७ढा.	सासणनायक सिमरतां...
ऋषिदत्ता रास	मणिप्रभसागरजी	२०४४		
ऋषिदत्ता कथानक(सं०)*	अज्ञात			
ऋषिदत्ता पुराण(?)*	अज्ञात			

1. कृतिनाम मां * (स्टार) सूचित कृतिओ आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर सुचनानुसार अप्रकाशित छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ञातकर्तृक

योगकल्पद्रुम

मुनि देवर्षिवल्लभविजय म.सा.

(गतांकथी आगळ...)

आत्मदुःखच्छिदेऽनल्पान्, सङ्कल्पान् कुर्वतस्तव ।

न काचिच्चेतसो वृत्तिराशानाशाय जायते ॥१६॥

अनु.- पोताना दुःखना उच्छेद माटे तुं अनेक संकल्प - विकल्पोने करे छे परंतु (ए दुःखना मूळ कारणभूत) आशा (ईच्छा)ना नाश माटे तारा चित्तनी कोई प्रवृत्ति थती नथी।

मूर्ख ! दुःखमयः सोऽयं, किमाभाति भवस्तव ।

यत्रेच्छातुलितं दुःखं, लभ्यते न पुनर्मुधा ॥१७॥

अनु.- हे मूर्ख आ संसार तने दुःखमय केम देखाय छे ? तेनुं कारण ए छे के अहीं जेटली इच्छा एटलुं दुःख रहेलुं छे।

आत्मन्नात्मनि सत्येव विश्वसाम्राज्यवैभवे ।

किं परप्रार्थनादैन्य-मचैतन्यं वितन्यते ॥१८॥

अनु.- हे आत्मन् ! विश्व साम्राज्यनो वैभव तारा आत्मामां ज छे, तो पछी आत्मस्वभावथी विपरीत एवी पर पुद्गलोनी(ईच्छा राखीने) प्रार्थना रूपी दीनताने केम विस्तारे छे? (वधारे छे?)

धने वा निधने वाऽपि, स्व-स्वकर्मनिबन्धने ।

त्वामहो सततं चेतश्चिन्ता सन्तापयत्यसौ ॥१९॥

अनु.- पोतपोताना कर्मना कारणे संपत्ति होय के न होय, आ मननी चिंता (विकल्पो) तने सतत संताप पमाडे छे।

सुखश्रद्धामुधाभ्रान्त-स्वान्तदुर्दान्तचेतसां(सा?) ।

[१३]स्वाधीनसर्वसम्पत्तौ, पत्रितां वितनोषि किम् ॥२०॥

अनु.- सुखनी श्रद्धाथी नकामां भमेला अंतःकरणने दुःखेथी (पण) दमन करी

१३. P- साधीनासमर्थसम्पत्तिः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शकनारा जीवोने सर्वसंपत्ति स्वाधीन छे। तो शा माटे पक्षीपणुं विस्तारे छे? (जेम पक्षी सतत फर्या करे छे, तेम सुखने परपदार्थोमां शोधतो जीव भटक्या करे छे।)

आशातन्तुभिरेवाऽयमात्मा बद्धोऽस्ति सर्वतः।

त्रुटितेषु पुनस्तेषु, मुक्तस्तत्कालमेव सः ॥२१॥

अनु.- आ आत्मा चारेबाजुथी आशाना तांतणाओथी बंधायेलो छे, ज्यारे ते तांतणाओ तूटशे त्यारे ते समये ज ते मुक्त थई जशे।

कथञ्चिदपि येनाऽशा-तन्तोरन्तो विलोक्यते।

संसारसागरस्याऽपि, प्राप्यते तेन निश्चितम् ॥२२॥

अनु.- कोईपण रीते जेना वडे आशाना तंतुनो अंत जोवाय छे, तेना वडे चोक्कस संसारसागरनो पण अंत प्राप्त कराय छे। (= विकल्परहित स्थिर थई जाय छे।)

हित्वा त्रिभुवनाऽऽक्रान्तिं, यदि स्याद् वामनं मनः।

तदानीमयमात्मैव, भवेत् त्रिभुवनोपरि[१४] ॥२३॥

अनु.- त्रणभुवननी व्यापकताने (एटले के आसक्तिने लीधे थती त्रणे भुवनना दरेक खूणामांनी दोडादोडने) छोडी मन ज्यारे वामन (एटले के आत्माना शुद्धस्वरूपमां सीमीत) थई जशे त्यारे आ आत्मा ज त्रणलोकनी उपर थई जशे। (जो मन त्रणलोकमां फेलायेल एनी रखडपट्टी (= संकल्प विकल्पो) छोडी (वामन=) एक ज शुभ योगमां स्थिर बनी जाय तो त्यारे ज आत्मा त्रण लोकनी उपर सिद्धिगतिमां पहोंची जाय)

परानन्दसुधापूरक्षीरनीरनिधिः स्वयम्।

आत्मन् ! बहिर्सुखश्रद्धासम्भ्रमी बम्भ्रमीषि किम् ॥२४॥

अनु.- हे आत्मन्! बाह्यसुखमां श्रद्धाना संभ्रमवाळो तुं वारंवार शा माटे बहार भमी रह्यो छे? प्रकृष्ट आनंदरूपी अमृतना पूरवाळो क्षीरोदधिसमुद्र तो तुं पोते ज छे। अर्थात् प्रकृष्ट आनंद तारा आत्मानी अंदर ज, तारा पोताना स्वरूपरूपे ज छे, फोगट बहार शोधी रह्यो छे।

सुखं यदेतत्तद्दुःखं, तत्त्यागस्तु परं सुखं।

चेतस्तदेतज्जानीहि, रहस्यं सुखदुःखयोः ॥२५॥

अनु.- जे पदार्थोमां तु सुख माने छे ते ज खरेखर दुःख छे, वळी ते "बाह्य सुखनो

---

१४. P- नोरपि,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्याग" ते ज श्रेष्ठ सुख छे। हे मन (आत्मा) ! सुख अने दुःखनुं आ रहस्य तुं जाणी ले।

सुखदुःखादिहेतुत्वं, वस्तुनो नास्ति वास्तवम् ।

[१५]किन्त्वेतत्कल्पनाजाल-कल्लोलकिलकिञ्चितम् ॥२६॥

अनु.- वस्तु (पदार्थ) ए सुखदुःख आदिनुं वास्तविक कारण नथी, परंतु सुखदुःखनुं कारण आ कल्पनाजालना उछळता मोजाओना जे कांई पण (सारा-नरसा) भावो थाय छे, ते छे।

सुधानिधाने स्वाधीन [१६]वर्त्तिनि स्वरसे सति ।

[१७]किमेष विषयस्तम्ब-चुम्बने मनसो रसः ॥२७॥

अनु.- अमृतना निधान सरीखो आत्मरस पोताने आधीन रहेलो छे तेम छतां मनने (अंगारदाहकना दृष्टांतनी जेम) विषयरूप आ घासना पूळाने चूमवा-चूसवामां रस केम छे?

आत्मनः कोऽपि महिमा, हिमांशोरिव मांसलः ।

अब्दोघैरिव शब्दाद्यैः परितः परिलुप्यते ॥२८॥

अनु.- वादळोना समूह वडे जेम चंद्रनो पुष्ट प्रकाश चारेबाजुथी ढंकाई जाय छे, तेम शब्दादि विषयो वडे आत्मानी मजबूत एवी पण शक्ति ढंकाई जाय छे (झूंटवाई जाय छे)

विस्मरन्ति सुखाभासाद्यदिदं सहजं सुखम् ।

अहो मोहस्य महिमा, तदयं देहिनां महान् ॥२९॥

अनु.- जीवो जे आभासिक सुखथी आ सहज सुखने भूली जाय छे, ते आ प्राणीओना मोहनो मोटो महिमा छे।

अहर्निशं तव स्वान्त ! स्वायत्तैकान्तशर्मणः ।

किमेषा विषयासङ्ग-सङ्गीतक-विडम्बना ॥३०॥

अनु.- हे मन ! (आत्मा) (तुं पोते ज) स्वाधीन अने एकान्त (एटले के मात्र अने मात्र) सुखरूप छे, त्यारे तारे निरंतर (कठपुतळी थई) आ विषयानुरागना नाचनी विडंबना शा माटे?

---

१५. P- किञ्चित्तत्, १६. P- ने, १७. P- क एष,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हा हा संसारकान्तारे, पामराः कामरागिणः ।

भ्रमन्ति परितो मुग्ध-मृगवन्मृगतृष्णया ॥३१॥

अनु.- जंगलमां जेम भोळा हरणाओ झांझवाना जळने कारणे (जळने जोईने) चारेबाजु आमतेम भमे छे। हा ! हा ! तेम काम माटे दीन बनेल कामरागीओ विषयसुखरूपी मृगतृष्णामां लंपट बनी संसारवनमां आम - तेम चारेबाजु भम्या करे छे।

मनःप्रकामं वामाक्षी-कटाक्षसमिरोर्मिभिः ।

विध्याप्यमानं [१८]सज्ज्ञान-दीपं स्थापय यत्नतः ॥३२॥

अनु.- हे यथेच्छविहारी मन ! स्त्रीओना नयनकटाक्षरूप पवननी लहेरथी बुझाता एवा सद्ज्ञानरूपी दीवाने अत्यंत प्रयत्न पूर्वक स्थापी राख।

स्वरूपा [१९]सारतां वक्ति, यत्र [२०]संस्कारसारता ।

वपुस्तदपि सौभाग्याद्, भङ्गुरीकृत्य नृत्यति[२१] ॥३३॥

अनु.- (पाठांतरमां "संस्कार"नी बदले "संसार" शब्द लेतां) संसारमां (कहेवातो कामभोगोना सुखरूप) जे सार छे, (एनी सच्चाई) ते तो संसारनुं जे (दुःखरूप, दुःखफलक, दुःखानुबंधी) स्वरूप छे, ते ज कही आपे छे। छतां (भूख आदि एक दुःखना प्रतिकाररूप) सौभाग्यथी मळेल (भावता भोजन आदि बीजा दुःखोना आभासिक) सुखोमां संसारनां आ दुःखरूप यथार्थ स्वरूप ने (जाणे के ए छे ज नहीं तेम) गणकार्या वगर ज देह (ए ज हुं पोते छुं तेवुं माननारो आ जीव गेलमां आवी जई संसारने ज साररूप मानी लई) नाचे छे।

अन्तः प्रविश्य हे स्वान्त ! निरूपय[२२] वपुस्थितिम् ।

क्षणान् मुकुलयेद् येन तरङ्गान् रागसागरः[२३] ॥३४॥

अनु.- हे मन ! शरीरनी अंदर प्रवेशीने शरीरनी स्थितिने (अवस्थाने) तुं बराबर जो, जेथी क्षणवारमां ज रागरूपसमुद्रना संकल्पविकल्परूपी तरंगो विलीन थई जाय।

मले विलोकिते दूरात्, कूणयन्ति विकूणिकाम् ।

तद्वासगेहे देहे तु, काप्यहो[२४] रमते मतिः ॥३५॥

अनु.- जेवी विष्ठा जोवाय के दूरथी (लोको) नाकने मटकोडे छे। (अर्थात् नाकने

---

१८. P- विज्ञान, १९. P-प, २०. P-संसार, २१. P-ते, २२. J,S-विचारय, २३. P-राः, २४. P-सौ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंध करी दे छे) तो ते विष्ठाना घर एवा देहमां पण कोईक मति एवी छे के रम्या करे छे। ते खरेखर आश्चर्यनी वात छे।

आत्मन् ! भवेत् प्रयत्नश्चेदात्मरूपनिरूपणे।[२५]

ततः[२६] स्यात्तव सर्वज्ञ-पदवी न दवीयसी ॥३६॥

अनु.- हे आत्मन ! जो आत्माना रूपनुं यथार्थ दर्शन करवामां ज्यारे प्रयत्न थशे, त्यारे तारे सर्वज्ञनी (केवळज्ञानीनी) पदवी दूर नही होय।

भवता भवतापस्य, पश्यतातीवतीव्रताम्।

कथं न स्थीयते चेतः ! स[२७]ज्ज्ञानानन्दनन्दने ॥३७॥

अनु.- हे चित्त ! संसारना तापनी अत्यंत तीव्रताने जोता एवा तमारा वडे सत्=साचा ज्ञानना आनंदरूपी नंदनवनमां शा माटे स्थिर थवातुं नथी? (अर्थात् जीव ज्यारे सांसारिक भावोमां जाय छे, त्यारे तेने ताप - संताप ज अनुभवाय छे, अने आत्मानी विचारणामां के अनुभूतिमां शीतळता अनुभवाय छे, तो पछी मनने त्यां स्थिर करवुं जोईए ने ? ताप लागे त्यारे ठंडकवाळा नंदनवन जेवा स्थाने जवुं जोईए ने ?)

हे स्वान्त ! विषयग्राम-विरामे रमसे यदि।

कषायाणामपस्मारं, विस्मारय तदा मुदा ॥३८॥

अनु.- हे मन (आत्मन्) ! तुं जो विषयसुखना त्यागमां रमे छे, तो कषायोनी मूर्च्छाने सुखेथी हवे भूली जा।

यदि ते चित्तस्याऽऽ[२८]टोपः, कोपसन्तापहेतुषु।

कथं प्रथममस्यैव, स्वरूपं [२९]नैव पश्यसि ॥३९॥

अनु.- क्रोध - संतापना कारणोमां जो तारा चित्तना धांधीया/चकरावा ज होय, तो पछी तु अहंकारना धांधीया/चकरावावाळा चित्तना आ स्वरूपने पहेलेथी ज शा माटे जोई लेतो नथी ?

(क्रमशः)

२५. P-आत्मन्यन्नश्वरात् नश्वरत्नश्चेत् आत्मरूप विलोकने। २६. P-तदा २७. P-स्व, २८. S-चेतसा, P-चित्तसो, २९. P-त्वं न.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिरोही राज्य अने जैन स्थापत्यो

अनुवादक :- मुनिराज श्री ज्ञानविजयजी

प्रसिद्ध ईतिहासज्ञ, श्रीमान रा. ब. गौरीशंकर हीराचंद ओझाए "सिरोही राज्य का इतिहास" नामक एक पुस्तक तैयार करेल छे। सिरोही राज्यमां पुष्कळ जैन स्थापत्यो छे एटले ए पुस्तकमां तेओए सिरोही राज्यमां आवेल जैन स्थापत्योने पण, तेना सन संवत् साथे, उल्लेख करेल छे। जो के एनी साथे साथे आचार्यो के राजानी परंपरा आपेल नथी, छतां सन-संवतनो स्पष्ट उल्लेख होवाना कारणे ऐतिहासिक दृष्टिए ए वस्तु उपयोगी होवाथी तेनो अनुवाद नीचे आपवामां आवेल छे। आशा छे जैन इतिहासना अभ्यासीओने एथी अवश्य नवुं जाणवानुं मळशे।

- अनुवादक

सिरोही- अहिं "देरासेरी"ना नामथी प्रसिद्ध स्थान छे जेनी अंदर चौमुखजीनुं मंदिर मुख्य छे; जे वि. सं.१६३४[1] ना मागशर सुद पांचमे बन्युं छे।

बामणवाडजी- आ गाममां प्रसिद्ध, विशाल महावीरस्वामीनुं जैनमंदिर छे। अहीं दूर दूरना लोको यात्रा माटे आवे छे। आ मंदिर क्यारे बन्युं ते चोक्कस कही शकातुं नथी, परंतु मुख्य मंदिरनी चोतरफ नानी नानी देरीओमांनी एक देरी उपर सं. १५१६ (ई. स. १४६२)नो शिलालेख छे। मुख्य मंदिर उक्त संवतथी पूर्वकालनुं होवुं जोईए।

जाडोली- अहीं शान्तिनाथनुं प्राचीन जैनमंदिर छे, जेना वि.सं. १२५५ (ई. स. ११९८)ना लेखमां परमार राजा धारावर्षनी राणी श्रृंगारदेवी जे नाडोलना चौहाण राजा केल्हणदेवनी पुत्री हती तेणे उक्त मंदिरने एक वाडी भेट कर्यानो उल्लेख छे।[2]

पींडवाडा- अहींना महावीरस्वामीना जैनमंदिरनी दीवाल उपर एक शिलालेख वि. सं. १४६५ (ई. स. १४०८) नो लागेल छे। लेखमां आ कसबानुं नाम **पिंडवाटक** लखेल छे।

अजार- अहिं एक वाव छे। तेनी पासे परमार राजा यशोधवलना समयनो वि. सं. १२०२ (ई. स. ११४५) अने चंद्रावतिना राजा रणसिंहना समयनो वि. सं. १२२३ (ई.

1. आ मंदिरना लेखमां संवत् १६३४, शाके १५०१ लखेल छे, परंतु संवतना अंकमां या शक अंकमां बे वर्षनो फरक छे, केम के सं. १६३४मां शक १४९९ थाय छे।

2. उक्त मंदिरनी दीवालमां लगाडेल वि. सं. १२५५ (ई. स. ११९८)ना लेखमां महावीरस्वामीनुं मंदिर लखेल छे तेथी अनुमान थाय छे के पहेलां आ मंदिर महावीरस्वामीनुं हशे पण पाछळथी तेमां शांतिनाथनी मूर्ति स्थापित कर्या पछी-शांतिनाथना मंदिर तरीके तेनी प्रसिद्धि थइ हशे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स. ११६६) नो तथा परमार राजा धारावर्षना समयनो वि. सं. १२४७ (ई. स. ११९०) नो लेख मळेल छे। तेनी उपर सेंकडो वर्षोनो वरसाद पडवाथी ते घसाई गयो छे तो पण तेमां लखेल संवत तथा राजाओनां नाम प्राचीन ईतिहास माटे घणा उपयोगी छे। अहीं महावीरस्वामीनुं जैनमंदिर छे जेनी अंदर सरस्वतीनी मूर्ति नीचे वि. सं. १२६९ (ई. स. १२१२)नो लेख छे।

वसन्तगढ- आखा सिरोही राज्यमांथी अत्यार सुधीमां जेटला शिलालेखो मळेल छे ते दरेकमां जुनो वि. सं. ६८२ (ई. स. ६२५)नो अहींथी मळेल लेख छे। ब्रह्मगुप्त नामना ज्योतिषीए शक सं. ५५० वि. सं. ६८५ (ई. स. ६२८)मां "स्फुटब्रह्मसिद्धान्त" नामनो ग्रन्थ रच्यो। अहीं एक टुटेल जैनमंदिरना भोंयरामांथी थोडा वर्ष उपर केटलीक मूर्तिओ नीकळी हती जेमांनी एक मोटी मूर्ति पर वि. सं. १५०७ (ई. स. १४५१) माघ सुदि ११ना मेवाडना महाराणा कुंभकर्णना समयनो लेख छे -

सं. १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणाश्री कुंभकर्ण राज्ये वसन्तपुर चैत्ये . . . .

अहींथी केटलीक पीतल (धातु) नी मूर्तिओ पण नीकळी हती। जेमांनी बे म्होटी मूर्तिओ उपर्युक्त पींडवाडाना जैनमंदिरमां राखेली छे, जेनी उपर विक्रम – संवत ७४४ (ई. स. ६८७)ने लेख छे।

नांदिआ - आ गामनी उत्तरमां एक मोटुं जैन मंदिर छे जेनी बहारनी दीवालमां लागेला एक लेखमां विक्रम संवत ११३० (ई. स. १०७३[1]) छे। उक्त मंदिर (नंदीश्वरचैत्य) नी आगल एक वाव बनाव्यानो उल्लेख छे।

कोजरा- आ गाममां संभवनाथनुं जैनमंदिर छे जेनी अंदर एक स्थंभपर वि. सं. १२२४ (ई. स. ११६७[2]) नो लेख छे जेमां आजे पार्श्वनाथनुं मंदिर लखेल छे जेथी संभव छे के वास्तविक आ मंदिर पार्श्वनाथनुं हशे अने पछीथी आमां संभवनाथनी मूर्ति स्थापित होवाने कारणे उक्त भगवानना नामथी प्रसिद्ध थयुं हशे।

रोहीडा- आ गाममां त्रण मंदिर छे। (१) पंचायति पार्श्वनाथ भगवाननुं (२) आदिनाथनुं अने (३) तेना ज बगीचामां महावीरस्वामीनुं मंदिर छे। आ त्रणे मंदिरो नवां छे। प्राचीनता कांई देखाती नथी।

वासा- आ गाममां जगदीश नामनुं शिवालय छे, तेना द्वार पर जैनमूर्ति बनावेल छे। आ मंदिरना विषयमां एवी प्रसिद्धि छे के आ मंदिर जैनमुर्ति माटे ज बनावेल हतुं,

1. मूल लेखमां क्षति थी १०३७ हतुं जे अमें सुधारी १०७३ करेल छे.- संपादक श्रुतसागर
2. मूल लेखमां क्षति थी ११३७ हतुं जे अमें सुधारी ११६७ करेल छे.- संपादक श्रुतसागर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परंतु पछीथी ब्राह्मणो अने महाजनोमां ते मंदिर माटे झगडो थयो अने अंते शिवमूर्ति स्थापित थई वासाथी बे माईल दूर कळागरा नामक एक गाम हतुं त्यां पार्श्वनाथनुं जैनमंदिर पण हतुं। अत्यारे एनुं नामनिशान नथी। त्यांथी एक शिलालेख वि. सं. १३०० (ई. स. १२४३)ने मळे छे। उक्त संवतमां चंद्रावतिनो राजा आहणसिंह हतो। उक्त गाम तथा मंदिरनो उल्लेख ते शिलालेखथी मळी शके छे।

कायद्रां- आ गामनी अंदर एक प्राचीन जैनमंदिर हतुं, जे मंदिरनो थोडा वर्षो पहेलां जीर्णोद्धार थयेल छे, मुख्य मंदिरनी चोतरफनी नानी देरीओमांथी एक देरीना द्वार पर वि. सं. १०९१ (ई. स. १०३४) लेख छे। अहीं बीजुं पण एक प्राचीन जैनमंदिर हतुं जेना पत्थर आदि लई जई रोहीडाना नवीन बनेल मंदिरमां लगावेल छे।

ओर- आ गाममां विठलाजी (वैष्णवमंदिर) छे तेनो मुख्य दरवाजो मारबलनो छे जेनी उपर सुंदर खोदकाम करेल छे अने तेनी उपर जैनमूर्ति होवाथी स्पष्ट जणाय छे के ते दरवाजो कोई जैनमंदिरमांथी लावी अहीं बेसाडेल छे। आ गामना एक वृद्ध पुरुषथी जाणवामां आवेल छे के पहेलां ते दरवाजो अहीं न हतो। वि. सं. १९१४ (ई. स. १८५७)मां आ मंदिरनी मरामत थई ते वखते उक्त दरवाजो चंद्रावतिथी लावी अहिं लगाडवामां आवेल छे। गामनी मध्यमां पार्श्वनाथनुं जिनालय पण छे, जेनी अंदर बे ऊभी मूर्तिओ छे तेनी उपर वि. सं. १२४० (ई. स. ११८३) वैशाख सुदि ११नो लेख छे जेमां आ मंदिरने "महावीरचैत्य" लखेल छे जेथी समजाय छे के पहेलां ए महावीरस्वामीनुं मंदिर हतुं।

हणाद्रा- आ गाममां एक जैनमंदिर छे। आबु उपर देलवाडा गाममां बनेल वस्तुपालना प्रसिद्ध मंदिरना शिलालेखमां **हंडाउद्रा** गामनुं नाम मळे छे।

[1]**मुंगथली**- अहीं प्राचीन पडी गयेल एक विशाल जैनमंदिर छे जेमां बधायथी पुराणो १२१६ (ई. स. ११५९)नो शिलालेख छे।

गिरवर- आ गाममां एक प्राचीन जैनमंदिर हतुं जे अत्यारे तुटेल खंडेरनी दशामां पडेल छे। पाटनारायणविष्णुमंदिर छे तेनो मारबलनो दरवाजो कोई जैनमंदिरोमांथी लावी लगाडेल छे, कारण के ते दरवाजामां जैनमूर्ति खोदेल छे।

(क्रमशः)

1. मूल लेखना क्रममां पहेलां चंद्रावती आवे छे अने पछी मुंगथली आपेल छे. अमे चंद्रावतीनुं आवता अंके आपीशुं.- संपादक श्रुतसागर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक नाम : छंदोनुसंधान।

संकलन एवं संपादन : पं. श्री अमृत पटेल।

आधार : छंदोनुशासन, वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, बृहत्पिंगल इत्यादि।

प्रकाशक : भद्रंकर प्रकाशन, अहमदाबाद।

आवृत्ति : प्रथम।

प्रकाशन वर्ष : वि.सं. २०७७, ईस्वी सन् २०२१।

भाषा : संस्कृत, प्राकृत एवं गुजराती।

विशेषता : काव्यरसिक और सर्जनप्रिय विद्वानों के लिए सर्वथोपयोगी।

पद्यात्मक कृतियों को पढने, गाने या रचना करने हेतु छंद का ज्ञान होना अतिआवश्यक है। छंद ज्ञान के बिना हम काव्य का आनंद ही नहीं ले सकते हैं। प्राचीन काल में छंद के अभाव में काव्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। हालांकि आज के आधुनिक युग में छंद रहित काव्य भी स्वीकृत हैं, जिसे खडीबोली का काव्य भी कहा जाता है। वर्तमान युग में छंद रहित काव्यों की रचना भी अत्यधिक मात्रा में विद्वानों द्वारा की जा रही है।

प्रस्तुत छंद ग्रंथ का संपादन पंडित श्री अमृतभाई पटेल ने किया है। वे अनेक वर्षों से पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों को व्याकरण शास्त्र के साथ ही छंदशास्त्र का भी सुन्दर अभ्यास करवा रहे हैं। उन्होंने भिन्न-भिन्न समुदायों के पूज्य महात्माओं को पढाने के क्रम में विविध छंद शास्त्रों में से उपयोगी लक्षणों का संकलन किया है और उसे क्रमानुसार विभाजित कर पुस्तकाकार रूप प्रदान किया है। वैसे तो छंदशास्त्र में अनेक प्रतिष्ठित छंदशास्त्र के ग्रंथ उपलब्ध हैं, फिर इस पुस्तक की क्या उपयोगिता यह प्रश्न उठना स्वभाविक है। इस संबंध में इस ग्रंथ के अवलोकन पश्चात इतना कहा जा सकता है कि आप छंदशास्त्र के छंदोनुशासन, छंदोमंजरी, वृत्तरत्नाकर आदि ग्रंथों को पढकर जितना ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, उससे अधिक ज्ञान मात्र इस एक ग्रंथ के अध्ययन से ही प्राप्त हो जाएगा। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देशी भाषाओं के छंदों का समावेश एक ही ग्रंथ में हुआ हो, ऐसा सर्वप्रथम प्रयास पंडित श्री अमृतभाई पटेल द्वारा किया गया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हम देखते हैं कि भारतीय प्राचीन काव्य साहित्य विशाल है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश जैसी प्राचीन भाषाओं में बड़ी मात्रा में काव्यसाहित्य की रचना हुई है। उसके बाद से आज तक क्षेत्रीय भाषाओं में भी काव्य रचना का कार्य निरंतर जारी है। काव्य रचना में व्याकरण, शब्दकोश और अलंकार शास्त्र का ज्ञान जितना अपेक्षित है उससे कहीं ज्यादा छंद का भी ज्ञान होना आवश्यक है। छंद ज्ञान के बिना काव्य की रचना करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

प्रस्तुत संकलन की विशेषता है कि इसमें प्राचीन एवं नव्य पद्धति से गणों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है, जो पाठकों के लिए बहुत उपयोगी है। छंद में आनेवाला विश्रामस्थान और छंद को गाने के संबंध में भी सरल मार्गदर्शन दिया गया है । छंदों को नियमानुसार विभागीकरण किया गया है, जिससे पाठकों को ढूँढने में सरलता होगी। परिशिष्ट के अन्तर्गत भी छंद से संबंधित बहुत ही उपयोगी एवं आवश्यक विषयों को देकर इस पुस्तक की उपयोगिता में बढोतरी की गई है।

पंडित श्री अमृतभाई पटेल ने इस कृति का संकलन करके विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार उनके इस कार्य की अनुमोदना करते हुए उनसे इसी प्रकार और साहित्य की अपेक्षा रखता है। आशा है पंडितजी भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सृजन करते हुए विद्यार्थीवर्ग को अनुपम उपहार प्रस्तुत करते रहेंगे।

❋ ♦ ❋

क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं ?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में आगम, प्रकीर्णक, औपदेशिक, आध्यात्मिक, प्रवचन, कथा, स्तवन-स्तुति संग्रह आदि विविध प्रकार के साहित्य प्राकृत, संस्कृत, मारुगुर्जर, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखित विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकों का अतिविशाल संग्रह है, जो हम ज्ञानभंडारों को भेंट में देते हैं। भेंट में देने योग्य पुस्तकों की सूची तैयार है। यदि आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं, तो यथाशीघ्र संपर्क करें। पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी।

ग्रंथपाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा मध्ये सूर्यतिलक दर्शन का नजारा

चारित्रचुडामणि प. पू. आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म.सा. के कालधर्मदिन व उसी घड़ी में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २२ मई को दोपहर २ बजकर ०७ मिनट पर भगवान महावीरस्वामी के ललाट पर सूर्यकिरणों ने तिलक किया। विश्वव्यापी कोरोना महामारी की वजह से इस वर्ष एक भी व्यक्ति श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के परिसर में नहीं आ पाया था। परन्तु इस आह्लादक दृश्य का यूट्यूब के माध्यम से Live प्रसारण किया गया था, जिसे विश्व के श्रद्धालुओं ने यूट्यूब पर देखा। अमेरिका, कनाडा, जापान आदि देशों के लगभग १० से १२ हजार श्रद्धालुओं ने यूट्यूब के ऊपर इस आह्लाक दृश्य का दर्शनकर स्वयं को कृतार्थ किया। इस रेकार्डिंग को अबतक देश-विदेश के लगभग १८,८३१ से अधिक लोग देख चुके हैं।

विद्वज्जगत में विषादजन्य घटना- विदुषी साध्वीवर्या श्री चंदनबालाश्री जी कालधर्म प्राप्त हुए

दि. ०२/०६/२१ के दिन अहमदाबाद में परम विदुषी साध्वीवर्या श्री चंदनबालाश्रीजी म.सा. कालधर्म प्राप्त हुए । उन्होंनें कई प्राचीन कृतियों का हस्तप्रतों, ताडपत्रों के आधार से संशोधन, संपादन का कार्य किया है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में प्राप्त सुचनानुसार भद्रंकर प्रकाशन, जिनशासन आराधना ट्रस्ट, श्रुतज्ञान प्रसारक सभा, कस्तूरभाई लालभाई स्मारकनिधि, गीतार्थ गंगा, श्रुतरत्नाकर आदि के माध्यम से अद्यावधि लगभग ६५ ग्रंथों का संपादन कर प्रकाशित करवाया हैं। कोबा भंडार का सर्वाधिक लाभ लेने वालों में से एक यह साध्वीवर्या भी थीं। वे कहा करती थी कि कोबा की ओर से मुझे जो साहित्य और सहयोग मिलता है, वह कहीं से भी प्राप्त नहीं होता है विशेष अभ्यासी, दीर्घ अनुभवी एवं शासन व श्रुत के प्रति समर्पित थीं।

साध्वीजी भगवंत दो तिथि मान्यता के होने पर भी सभी समुदाय के अध्ययनार्थी व संशोधनार्थीओं को श्रुत के क्षेत्र में विविध भंडारों से ह.प्र. उपलब्ध कराना आदि से लेकर प्रूफरीडिंग तक के कार्यों में समानरूप से पुरी उदारता से सहयोग किया है, अतः वे सभी के सदैव आदरपात्र रही हैं। साध्वीवर्ग में इस लेवल पर श्रुत में परिश्रम करने वाले आज के समय में प्रायः वे एकमात्र थी। शारीरिक अस्वस्थता के कारण पिछले कुछेक वर्षों से जेठाभाईपार्क अहमदाबाद में स्थिरता थी। अभी अक्षयतृतीया के दिन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही इनके दीक्षा पर्याय के ५० वर्ष मनाये गये थे, सभी आचार्य भगवंतों के आशीर्वाद भी इन्होंनें ग्रहण किये थे। इनके कालधर्म से जिनशासन को, श्रुतक्षेत्र को बड़ी क्षति पहुँची है। श्रुतोपासक साध्वीवर्याश्री की आत्मा जल्द ही केवलज्ञान की अधिकारी बने यही शुभकामना व श्रद्धासमर्पण।

पाली-प्राकृत-जैन-बौद्ध-हिंदु धर्म के प्रकांड विद्वान डॉ. पद्मनाभ जैनी का देहावसान

दि. २५ मई २०२१ को विद्वज्जगत के लिए एक दुःखद घटना हुई। डॉ. पद्मनाभ जैनी का ९६ वर्ष की उम्र में बर्कले, अमेरिका में देहावसान हुआ। डॉ. जैनी पाली, प्राकृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। जैन, बौद्ध, हिंदु आदि धर्मों के भी ज्ञाता थे। उन्होंनें पंडित सुखलालजी के पास अध्ययन किया था। पंडित श्री सुखलालजी की प्रेरणा से पाली ग्रंथों के अध्ययनार्थ श्रीलंका गये, वहाँ पालीभाषा व बौद्धधर्म के प्रकांड विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हुए। ई.सन १९५१ में श्रीलंका के उस समय के प्रधानमंत्री सेनानायक नें उन्हें श्री पट्टकाचार्य की पदवी प्रदान की। तत्पश्चात् उन्होंने लंडन में पी.एच.डी. हेतु महानिबंध का कार्य किया। ई.सन १९७२ से १९९४ तक केलिफोर्निया की बर्कले युनि. में अध्यापन का कार्य किया। उसके बाद प्रोफेसर एमरिट्स के रूप में उनकी प्रवृत्ति चालु रही। उनकी विद्या उपासना को देखकर युनि. नें 'पद्मनाभ एस. जैनी ग्रेज्युएट स्टुडन्ट एवोर्ड' जाहिर किया, जो युनि. में बौद्ध धर्म के अध्ययनार्थीओं को शिष्यवृत्ति के रूप में दिया जाता है।

डॉ. जैनीजी कोबा ज्ञानमंदिर की मुलाकात ले चुके है और यहाँ की सुविधा से बहुत ही प्रभावित थे। देश-विदेश के अपने विद्यार्थीओं को रिसर्च के लिए कोबा भेजते रहते थे। इनकी एक विद्यार्थीनी (पीस्ती) १ महिने की अवधि लेकर आई थी, कोबा की सुविधाओं के कारण उनका कार्य ८ दिन में पुरा हो गया था। कोबा के प्रति डॉ. जैनीजी का विशेष आदरभाव रहा है।

आ. श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में डॉ. जैनी द्वारा लिखित कई किताबें हैं। हिन्दी ग्रंथ कार्यालय प्रकाशित इनके संस्मरणों की किताब Coincidences (YOGAYOGA) में इनके जीवन के बारे विशेष उल्लेख किया गया है। ई.सन १९५२ से लेकर २०१८ तक में ८४ जितनी किताबें लिखी हैं। गुगल ऑनलाईन के युग में भी विद्याभिलाषिओं के लिए डॉ. जैनी बडे ही आदरपात्र रहे हैं।

❊ ◆ ❊

For Private and Personal Use Only

दि. २२-०५-२०२१ श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में प्रतिष्ठित
प्रभु महावीर स्वामी के भाल पर सूर्यतिलक का मनोरम दृश्य ।

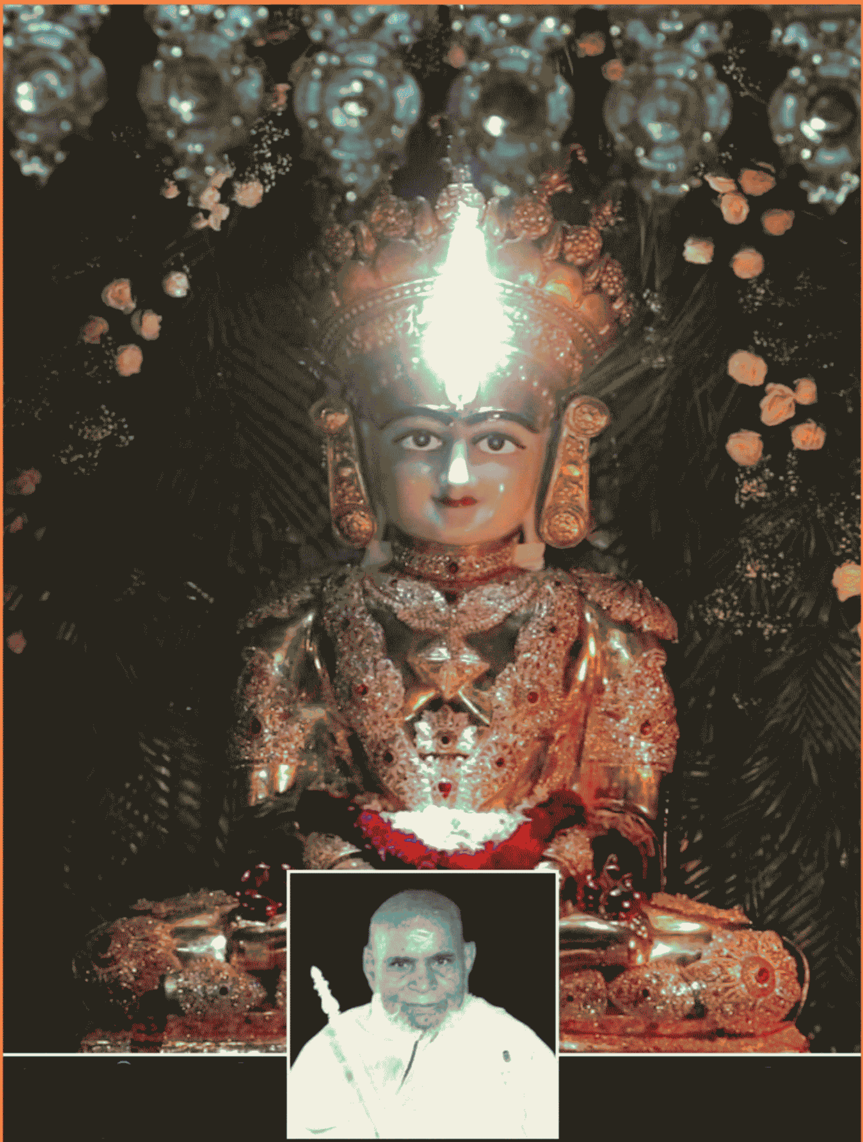

22-05-2021

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

११०वीं पुण्यतिथि के प्रसंग पर आणंदजी कल्याणजी पेढी के
प्रमुख सेठ श्री लालभाई दलपतभाई को सादर श्रद्धासुमन

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only